NATIONAL INSTITUTE OF HYDROLOGY
ROORKEE- 247667 (U.P.)

ज़िन्दगी का मोल

अशोक कुमार
परिचर

ग़म की धूप में कभी नहाकर तो देखो,
जिन्दगी है क्या ? कभी किताबों को हटाकर तो देखो ।
सौ अवगुणों पर तेरे परदा डालेगी कुदरत,
तुम किसी एक का, अवगुण छिपाकर तो देखो,
फूल खिल जायेगें, नाच उठेगी घर में बहारें,
मेहनत का पसीना कहीं, तुम बहाकर तो देखो ।
परिन्दों को आश्रय, व छाँव भी मिलेगी घनी
पेड़ कोई आँगन में, अपने लगाकर तो देखो ।
दोस्त तो अपने हैं, दुश्मन भी चले आयेगें,
प्यार से कभी, किसी को बुलाकर तो देखो ।
ज्ञान वो दौलत है, लूट न पायेगा कोई जिसे
इसे अपनों और समाज में बाँटकर तो देखो ।
ज़िन्दगी की राहों में हर काई खाता है ठोकर,
कभी किसी पत्थर को तराशकर तो देखो ।
ज़िन्दगी तो अनमोल है, सब रह जायेगा यहीं
ज़िन्दगी का मोल यूँ, लगाकर तो न देखो ।